उपसर्ग

[शास्त्री द्वितीय वर्ष]

शब्द-रचना

→ वर्णों के सार्थक समूह को 'शब्द' कहते हैं।

→ व्युत्पत्ति के आधार पर शब्द के तीन भेद होते हैं—

1. रूढ़
2. यौगिक
3. योगरूढ़

मूलतः शब्द के दो ही भेद होते हैं— रूढ़ और यौगिक। योगरूढ़ अर्थ की दृष्टि से रूढ़ होता है। रचना की दृष्टि से यौगिक और योगरूढ़ समान होते हैं। रूढ़ के हम खण्ड नहीं कर सकते हैं, अतः रचना में यौगिक ही रह जाते हैं जिनसे हम शब्द-रचना कर सकते हैं।

→ यौगिक शब्दों की रचना तीन प्रकार से होती है—

1. उपसर्ग से — अति + अन्त = अत्यन्त

अति ↓ उपसर्ग; अन्त ↓ मूलशब्द/धातु; अत्यन्त ↓ यौगिक शब्द

2. प्रत्यय से - लेन + दार = लेनदार
↓ ↓ ↓
मूल शब्द प्रत्यय यौगिक शब्द

3. समास से - प्रति + दिन = प्रतिदिन
↓ ↓ ↓
शब्द शब्द यौगिक शब्द

उपसर्ग

→ उपसर्ग = उप (समीप) + सर्ग (सृष्टि करना) का अर्थ है - किसी शब्द के समीप आ कर नया शब्द बनाना।

→ जो शब्दांश शब्दों के आदि में जुड़ कर उनके अर्थ में कुछ विशेषता लाते हैं अथवा एक नये अर्थ का सृजन करते हैं, वे उपसर्ग कहलाते हैं।

जैसे - 'हार' शब्द का अर्थ है - पराजय। परन्तु इसी शब्द के आगे 'प्र' शब्दांश को जोड़ने से नया शब्द बनेगा - प्रहार (प्र + हार) जिसका अर्थ है 'चोट करना'।

भूपेन्द्र सिंह
सहायक प्राचार्य, हिन्दी
अवध विहारी संस्कृत महाविद्यालय,
रहीमपुर, खगड़िया।

Scanned with CamScanner